MAHD-05

December - Examination 2025
M.A. (Final) Examination
हिन्दी साहित्य
नाटक और कथेत्तर गद्य विधाएँ
Paper : MAHD-05

[*Time: **3** Hours*] [*Maximum Marks: **80***]

निर्देश :– यह प्रश्न–पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड–'अ' **8×2=16**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **सभी** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **2** अंक का है।

1. (i) 'नदी प्यासी थी' एकांकी के रचनाकार का नाम बताइए।

   (ii) धर्मवीर भारती के नाटक 'अंधायुग' का प्रकाशन वर्ष बताइए।

   (iii) प्रताप नारायण मिश्र के निबंधों की विशेषताएं बताइए।

   (iv) 'डायरी' विधा को परिभाषित कीजिए।

   (v) 'आवारा मसीहा' किसकी जीवनी है?

   (vi) प्रमुख व्यंग्यकारों के नाम लिखिए।

   (vii) 'एक दुराशा' निबंध का प्रतिपाद्य बताइए।

   (viii) 'कथेत्तर गद्य' को परिभाषित कीजिए।

खण्ड–'ब' **4×8=32**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **8** अंक का है।

2. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

''लोक में फैली दुख की छाया हटाने में ब्रह्म की आनंदकला जो शक्तिमय रूप धारण करती है उसकी भीषणता में भी अद्‌भुत मनोहरता, कटुता में भी अपूर्व मधुरता, प्रचंडता में भी गहरी आर्द्रता साथ लगी रहती है। विरुद्धों का यही सामंजस्य कर्म क्षेत्र का सौंदर्य है जिसकी ओर आकर्षित हुए बिना मनुष्य का हृदय नहीं रह सकता। इस सामंजस्य का और कई रूपों में भी दर्शन होता है। भीषणता और सरसता, कोमलता और कठोरता, कटुता और मधुरता, प्रचंडता और मृदुता का सामंजस्य ही लोक–धर्म का सौन्दर्य है।

3. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

''इधर कई एक साहित्यकारों की जन्म–शताब्दियां मनाई गई हैं और लगभग प्रत्येक के साथ विरासत का प्रश्न बड़े विकृत रूप से उठाया गया है, मानों हम अपने को परंपरा में जोड़ने की बात न सोचकर परंपरा को अपने एकाधिकार में ले लेना चाहते हों। विचित्र बात है कि साहित्यकारों को अपनी–अपनी सम्पत्ति सिद्ध करने की यह प्रवृत्ति उन्हीं लोगों में अधिक है जो दूसरे क्षेत्रों में सम्पत्ति के अधिकार के विरोध की बात करते हैं।

4. निम्नलिखित गद्यांश की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

''प्रश्न के स्वर से और पूछने के ढंग से मैं एक तरफ बैठा भी तिलमिला गया प्रेमचंद भी एक छोटे क्षण के लिए सकते में आ गये थे, लेकिन तुरन्त संभलते हुए उन्होंने संयत स्वर में कहा, एक क्यों मैं तो दोनों पैर कब्र में लटकाये बैठा हूं फिर भी कहता हूं कि साधना का बड़ा महत्त्व होता है और बात पूरी करके उन्होंने अपना प्रसिद्ध कहाकहा लगाया कि गूंज आज भी कभी–कभी उनके दोनों बेटों –श्रीपत राय और अमृत राय की हंसी सुनाई दे जाती है। स्पष्ट था कि इस बीच प्रश्न की बदतमीजी पर उन्होंने पूरी तरह विजय पा ली है।

5. 'मोहन राकेश' के नाटकों में स्त्री पात्र पर्याप्त महत्वपूर्ण है। राकेश के नाटकों के आधार पर इस कथन की समीक्षा कीजिए।
6. 'अंधा युग' नाटक की आधुनिकता और प्रासंगिकता पर चर्चा कीजिए।
7. 'आधे–अधूरे' नाटक के नाट्य शिल्प पर प्रकाश डालिए।
8. 'अशोक के फूल' का भाषिक सौन्दर्य निरूपित कीजिए।
9. 'गीतिनाट्य' को परिभाषित करते हुए प्रमुख गीतिनाट्यों का परिचय प्रस्तुत कीजिए।

खण्ड–'स' **2×16=32**

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :– **किन्हीं दो** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **500** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न **16** अंक का है।

10. बालमुकुन्दगुप्त के जीवन परिचय एवं रचनात्मक योगदान की समीक्षा कीजिए।
11. उग्र जी ने अपनी आत्मकथा में लाला भगवान दीन की किन विशेषताओं को उभारा है?
12. 'रेखाचित्र' और 'संस्मरण' दोनों भिन्न विधाएं हैं। इस कथन के आलोक में रेखाचित्र और संस्मरण की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
13. निम्न में से किन्हीं दो पर टिप्पणियां लिखिए –
    (i) जीवनी
    (ii) एकांकी
    (iii) ललित निबंध
    (iv) पात्र एवं चरित्र–चित्रण